7

''स्वर्ग का राज्य निकट आया है''

''उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17)।

सुसमाचार सभा करने के लिए कई बार मुझे ऐसी जगहों पर जाने के लिए कहा जाता है जहां मैं पहले कभी नहीं गया होता। ऐसी परिस्थिति, जिन भाइयों के साथ मैंने काम करना होता है उनसे मैं पहले कभी नहीं मिला होता हूं, जिस कारण मुझे उनके साथ नया अनुभव और नया सम्बन्ध मिलता है। उस मण्डली के किसी व्यक्ति से फोन पर बात करते हुए या उस घटना के बारे में लिखे पत्र को पढ़ते हुए, मेरे दिमाग में ऐसी तस्वीर बनती है जिसका मैंने आनन्द उठाना होता है। ठहराया हुआ दिन आने पर जब मैं वहां पहुंचा जहां सुसमाचार सभा होनी थी, तो जो कुछ मैंने सोचा था उसकी तुलना उससे करना जो अपनी आंखों से देखा सचमुच दिलचस्प था। कोई भाई मेरे पास आकर हाथ मिलाएगा और मैं अपने आप से कहूंगा, ''हां, फोन पर इसी आदमी से मेरी बात होती थी।'' या, बोलने के लिए अपने समय की प्रतीक्षा करते हुए मैं अपने आस पास देखकर कहूंगा, ''यही वह मण्डली है जिससे मिलने के लिए मैं बेताब था।''

पवित्र शास्त्र में कलीसिया के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है। परमेश्वर के राज्य के जीवंत चित्रण से पहले भविष्यवाणी में दिखाया गया है अर्थात पहले यह पुराने और नये नियम में भविष्यवाणी में और फिर प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक जीवित, सामर्थी क्रियाशील, आत्मिक देह के रूप में मिलता है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि कलीसिया का संसार में आना *गलती से* नहीं बल्कि *पहले से सोचा समझा परमेश्वर का विचार* था। यह बीते अनन्तकाल के बहुत लम्बे समय से परमेश्वर की पूर्व कल्पित योजना का पूरा होना था।

पूरी बाइबल में तीन प्रकार की भविष्यवाणियां मिलती हैं: नाम से भविष्यवाणी, दोहरी भविष्यवाणी और प्रतिनिधिक भविष्यवाणी।

नाम से भविष्यवाणी, या विस्तृत भविष्यवाणी, वह भविष्यवाणी है जिसमें जिस व्यक्ति

या स्थान के सम्बन्ध में भविष्य में होने वाली घटना के बारे में बताया जाता है अर्थात उसे विशेष तौर पर पृथक कर देना। उदाहरण के लिए राजा यारोबाम जब वेदी पर धूप जलाने की तैयारी कर रहा था तो एक अनाम नबी ने उसे बताया कि उसने बेतेल में परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है। यारोबाम को डांटते हुए उस नबी ने कहा कि एक दिन इस वेदी पर मनुष्यों की हड्डियां जलाकर योशिय्याह यारोबाम की वेदी को भ्रष्ट करेगा। यह भविष्यवाणी योशिय्याह द्वारा किए गए सुधार के समय पूरी हुई जो कि अच्छे दक्षिणी राजाओं में से एक था (2 राजा 23:20)।

नाम से भविष्यवाणी का एक और उदाहरण यशायाह 44:28 में, कुस्त्रू नामक फारसी राजा होगा। उसके होने से भी लगभग 150 वर्ष पूर्व यशायाह द्वारा उसका उल्लेख ऐसे राजा के रूप में किया गया था जिसने बाबुल की दासता के बाद यहूदी लोगों को अपने देश लौटकर फिर से यरूशलेम को बनाने की अनुमति देनी थी (यशायाह 44:28; तु. एज्रा 1:1-3)। नाम लेकर भविष्यवाणियां अज़्सर स्पष्ट और आसानी से समझ आ जाने वाली होती हैं।

भविष्यवाणी की दूसरी किस्म अर्थात *दोहरी भविष्यवाणी* उस भविष्यवाणी को कहा जाता है जिसकी *उस समय* भी प्रासंगिकता थी जब यह की गई थी और भविष्य में *किसी दिन* फिर यह प्रासंगिक होगी। कुंवारी से यीशु के जन्म से सज़्बन्धित यशायाह 7:14 की भविष्यवाणी को दोहरी भविष्यवाणी माना जाता है। इससे आहाज़ को यह उत्साहित करने वाला समाचार देकर बताया गया था कि उसके शत्रु रसीन और पेकह जल्दी ही मिट जाएंगे; इस भविष्यवाणी में कुंवारी के द्वारा आश्चर्यकर्म से भविष्य के किसी दिन यीशु के पैदा होने की पूर्व सूचना भी दी गई थी। मज़ी ने भविष्यवाणी के उस भाग की जिमसें कुंवारी से जन्म का वर्णन किया गया है, व्याज़्या परमेश्वर की प्रेरणा से की है (मज़ी 1:23)।

भविष्यवाणी की तीसरी किस्म *प्रतिनिधिक भविष्यवाणी* अर्थात ऐसी भविष्यवाणी है जो किसी तरह भविष्य की घटना या परिस्थिति का *पूर्वाभास* देती है। उदाहरण के लिए यूसुफ मरियम और बालक यीशु को हेरोदेस के क्रोध से बचाने के लिए मिसर में चला गया और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा। मिसर से नासरत में उनका लौटना प्रतिनिधिक भविष्यवाणी का पूरा होना था। भविष्यवाणी के इस अर्थ के बारे में हम पज़्का कह सकते हैं, ज़्योंकि मज़ी ने उनके मिसर से लौटने के सज़्बन्ध में बताया है, ''इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यवज़्ता के द्वारा कहा था कि मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया, पूरा हो'' (मज़ी 2:15)। पुराने नियम का पद जिसे मज़ी ने उद्धृत किया था होशै 11:1 है, जो यहोवा के अपने लोगों को मिसर की दासता से छुड़ाकर लाने का एक ऐतिहासिक रूपक है। इस प्रकार, मिसर की दासता से इस्राएल का आना मिसर से बालक मसीह के आने की उससे कहीं अधिक बड़ी घटना का चिह्न, या पूर्वाभास या जिसे हम प्रतिरूप कह सकते हैं, था। प्रतिनिधिक भविष्यवाणियां अस्पष्ट होती हैं, और उन्हें समझने और उनकी व्याज़्या करने के लिए हमें परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त व्याज़्या पर अधिक निर्भर रहना चाहिए।

आइए हम विशेषकर उन भविष्यवाणियों पर विचार करते हैं जो यीशु ने कलीसिया या

राज्य के विषय में कीं, और उनमें से अधिकतर भविष्यवाणियां स्पष्ट हैं। यीशु हमारा राजा और महायाजक है, पर साथ ही वह परमेश्वर का नबी भी था। मूसा ने कहा था, ''तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसकी सुनना'' (व्यवस्थाविवरण 18:15)। प्रेरितों 3:18-23 में पतरस ने मूसा की इस भविष्यवाणी को यीशु के लिए की गई भविष्यवाणी बताया। इब्रानियों के लेखक ने भी यीशु के सम्बन्ध में कहा है, ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं ...'' (इब्रानियों 1:1, 2)।

परमेश्वर के नबी के रूप में यीशु ने कलीसिया, या आने वाले राज्य के विषय में कई भविष्यवाणियां कीं। पुराने नियम की भविष्यवाणियों की तरह, उसके प्रकाशन भी पूरे हुए, जैसा कि नये नियम और इतिहास का कोई भी छात्र देख सकता है। कलीसिया के विषय में यीशु द्वारा की गईं भविष्यवाणियों पर प्रकाश डालना विशेषकर राज्य के प्रारम्भ के समय और प्रकृति को तय करने के लिए विशेष तौर पर शिक्षाप्रद है।

जल्द आ रहा

यीशु ने पहले ही बता दिया था कि राज्य जल्द आ रहा है। यह निकट था या आने ही वाला था। यह ''आ गया'' या वर्तमान में नहीं बल्कि ''निकट'' अर्थात अतिशीघ्र आने वाला था। इसकी स्थापना का समय, हमारे कह देने की तरह ''बस कुछ समय बाद'' या ''अधिक दूर नहीं'' था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रचार के द्वारा कि लोग मन फिराएं यीशु की सेवकाई के लिए रास्ता तैयार किया, क्योंकि राज्य ''निकट'' था। मत्ती ने यूहन्ना के विषय में कहा, ''उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा, मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 3:1, 2)।

बपतिस्मा लेने तथा शैतान द्वारा परीक्षा लेने के बाद ''यीशु ने'' स्वर्ग के राज्य के निकट होने का प्रचार करके पृथ्वी की अपनी सेवकाई आरम्भ की, जो कि वही संदेश था जिसका प्रचार यूहन्ना ने किया था। मत्ती ने उसके बारे में लिखा, ''उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 4:17)। लिमिटेड कमीशन अर्थात सीमित आज्ञा पूरी करने के लिए बारह प्रेरितों को बाहर भेजते हुए, यीशु ने उनसे कहा था, ''और चलते-चलते प्रचार कर कहो, स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 10:7)।

कोई कह सकता है, ''क्या ऐसा नहीं लगता कि यीशु ने राज्य के विषय में अपनी दूसरी कई टिप्पणियों में संकेत दिया कि स्वर्ग का राज्य उसकी सेवकाई के दौरान ही था? क्या 'निकट' होने की उसकी भविष्यवाणियां इन पदों के विपरीत नहीं हैं?'' यह बहुत अच्छा प्रश्न है। उसके कथनों में से दो जिनकी व्याख्या की जा सकती है, मत्ती 11:12 और मत्ती 12:28 हैं: ''यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे

छीन लेते हैं'' (मत्ती 11:12); ''पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है'' (मत्ती 12:28)।

मत्ती 11:12 को अधिक निकटता से पढ़कर, यह देखा जाता है कि यीशु उन लोगों के बारे में बात कर रहा था जिन्होंने राज्य के आने के बारे में सुना था और वे इसे परमेश्वर की नहीं बल्कि अपनी समयसारणी के अनुसार ''तुरन्त आते'' देखना चाहते थे। यीशु यह नहीं कह रहा था कि राज्य आ चुका है, लेकिन वे भ्रमित, जोश से भरे लोग इसे परमेश्वर द्वारा ठहराए गए समय से पहले लाना चाहते थे। उनकी तुलना रेशम के कीड़े में से समय से पहले तितली निकालने के लिए उसे तोड़ने वाले बच्चों से की जा सकती है।

12:28 में यीशु अपने द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने की बात कर रहा था जिसके लिए उस पर बालज़बूल की सामर्थ से चंगाई देने का आरोप लगाया गया था। उसने इस आरोप का जवाब यह ध्यान दिलाते हुए दिया कि वह यह आश्चर्यकर्म परमेश्वर की सामर्थ से करता था, जिससे यह सिद्ध होता था कि वह परमेश्वर की ओर से है। परमेश्वर के पुत्र की उनमें उपस्थिति का अर्थ यह था कि परमेश्वर का राज्य इस संसार में ''घुसने'' लगा था। राज्य अभी आया नहीं था, परन्तु उनके बीच परमेश्वर के पुत्र, अर्थात आने वाले राज्य के राजा की उपस्थिति से, इसके आने की प्रक्रिया शुरू हो गई थी।

यीशु ने यह प्रचार नहीं किया कि
राज्य समय के अन्त में *आ रहा है,*
बल्कि वह यह प्रचार करता था कि
यह उसकी सेवकाई के थोड़ी देर बाद
समय में ही *आ रहा है।*

बाइबल की सही व्याज़्या के लिए आवश्यक नियम अस्पष्ट आयतों की व्याज़्या करने के लिए स्पष्ट आयतों की व्याज़्या करने की अनुमति देना है। इसलिए यूहन्ना के और प्रभु के प्रचार में ''निकट'' शज़्द को राज्य के आने के समय के सज़्बन्ध में दिए जाने वाले स्पष्ट संदेश के रूप में देखा जाना चाहिए। यह परमेश्वर की समय रेखा के बारे में दो सच्चाइयों को स्थापित करता है: पहली, जब वे प्रचार कर रहे थे उस समय राज्य *आया नहीं था,* बल्कि भविष्य में आने वाला था; दूसरी, राज्य *शीघ्र* आने वाला था अर्थात इसका आना *जल्द* होना था। ये सच्चाइयां केवल महत्वहीन विवरण ही नहीं हैं जिन पर हमें विचार करने की आवश्यकता न हो। इनसे हमें वह महत्वपूर्ण सबक मिलता है जिसका यीशु ने प्रचार नहीं किया कि राज्य *समय के अन्त में* आ रहा है बल्कि यह उसकी सेवकाई के थोड़ी देर बाद *समय में* ही आ रहा था। हम आनन्द कर सकते हैं कि यह वाज़्यांश आगे और अर्थ देता है कि राज्य अब इस समय है और *हमारे लिए* भविष्य में आशा रखने वाली चीज़ नहीं!

जब हमारे बच्चे छोटे थे, तो हम उन्हें कभी-कभी खिलौना या कोई ऐसी चीज़ खरीदने के लिए जिसे वे लेना चाहते थे, दुकान में ले जाने के लिए मान जाते थे। शायद किसी

जन्मदिन के समय या किसी अन्य अवसर पर कोई उपहार खरीदने के लिए उन्हें पैसे मिले थे। हमने वायदा किया था कि ''थोड़े समय बाद हम दुकान में जाएंगे और जो आपको भी चाहिए वह ले देंगे।'' बच्चे चाहते हैं कि उन्हें चीज़ जल्दी से मिल जानी चाहिए इसलिए समय बिताना उनके लिए कठिन हो जाता है। हर एक-दो मिनट बाद, लगता था कि वे पूछेंगे, ''चलें? जाने का समय हो गया ज़्या?'' हम कहते, ''नहीं, अभी नहीं। थोड़ी देर बाद जाएंगे। अभी समय नहीं हुआ है।'' उनके लिए ''समय निकट है'' वाज़्यांश को समझना कठिन था। वे प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे ज़्योंकि उनके लिए जीवन का अर्थ हमेशा *अभी* होता है। कई बार हमें यही कहना पड़ता था, ''अब दोबारा मत पूछना कि कब जाना है। जब जाना होगा मैं तुज़्हें बता दूंगा।''

यूहन्ना और यीशु द्वारा इस्तेमाल किया गया वाज़्यांश ''निकट है'' भविष्य के समय के लिए है जब राज्य आना था और इसका अर्थ वह समय भी था जब राज्य नहीं आया था। उनके आधार पर, हमें राज्य के वर्तमान के लिए यीशु और यूहन्ना के प्रचार के समय के दौरान की बात कि स्वर्ग का राज्य शीघ्र आने वाला है, को नहीं देखना चाहिए बल्कि हम तर्कसंगत ढंग से यह उज़्मीद कर सकते हैं कि राज्य यीशु की सेवकाई के अन्त में या उसके थोड़ी देर बाद आ गया।

सामर्थ के साथ आना

यीशु ने यह भी घोषणा की कि राज्य ने ऊपर से सामर्थ अर्थात बड़ी सामर्थ के साथ आना था। मरकुस 9:1 कहता है, ''... मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।''

इस पद में यीशु ने प्रकट किया कि राज्य उस पीढ़ी के लोगों में से कुछ के जीवनकाल में ही आ जाना था जिनके साथ वह बात कर रहा था। हमारे प्रभु की भविष्यवाणी के तीन निष्कर्ष निकाले जाने चाहिए: (1) राज्य उनमें से कुछ लोगों के जीवनकाल में ही आ जाना था जो उस समय उसकी बात सुन रहे थे। (2) राज्य के आने के समय उसके सुनने वालों में से सब ने जीवित नहीं होना था। (3) राज्य के आने का एक स्पष्ट चिह्न इसका ऊपर से सामर्थ के साथ आना था।

हम सब अपने जीवन में हर रोज़ स्पष्ट चिह्नों का इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के लिए किसी दूसरे द्वारा कोई चीज़ लाने के लिए भेजने को आसानी से समझा जाता है। मेरी पत्नी जानती है कि बिना साफ-साफ बताए कि कौन सी ब्रैड लानी है, मुझे ब्रैड खरीदने के लिए दुकान पर भेजना खतरनाक है। यह जानते हुए कि मैं दुकान में कुछ खरीदते समय भी मन में संदेश तैयार करता रहता हूं, वह मुझे न केवल यह बताएगी कि ब्रैड कौन सी कज़्पनी की लानी है बल्कि यह भी बताएगी कि कौन सी ब्रैड लानी है। वह कह सकती है, ''बेकमैन की ब्राउन ब्रैड ही लाना।'' विशेष गुण बताए बिना, उसे मालूम है कि मैं गलत ब्रैड ले आऊंगा।

राज्य की स्थापना के दिखाई देने वाले चिह्न सुसमाचार की पुस्तकों में दिखाई देने लगे

थे। यूहन्ना और यीशु के प्रचार से हम जानते हैं कि राज्य का आना ''निकट'' था। इसका अर्थ यह है कि हम इसके आने का समय यीशु की सेवकाई के अन्त या उसके थोड़ी देर बाद देखें। हम यह भी जानते हैं कि राज्य सामर्थ के साथ उन लोगों में से कुछ के जीवन काल में ही आ जाना था जो मरकुस 9:1 में यीशु की बातें सुन रहे थे। इसका आना शीघ्र होना था, और इसके आने की पुष्टि ऊपर से मिली सामर्थ से होनी थी।

आत्मा के साथ आना

अपनी शिक्षाओं में यीशु ने कहा कि राज्य आत्मा के साथ आएगा। स्वर्ग पर उठा लिए जाने से थोड़ी देर पहले उसने अपने प्ररितों को बताया, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे ...'' (प्रेरितों 1:8)। इसे दूसरे ढंग से कहें, तो राज्य का आना पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के साथ उतरने से जुड़ा हुआ है।

याद रखें कि यीशु ने पहले कहा था कि उसके पास खड़े लोगों में से कुछ लोग मृत्यु का स्वाद तब तक नहीं चखेंगे जब तक कि वे परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें (मरकुस 9:1)। प्रेरितों 1:8 में उसने अपने प्रेरितों को बताया कि पवित्र आत्मा के उन पर उतरने पर वे सामर्थ पाएंगे। यीशु ने प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के इस उतरने को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी कहा। लूका ने यीशु द्वारा अपने प्रेरितों के साथ बिताए गए अन्तिम दिनों के बारे में लिखा:

> और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो ज़्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।
>
> सो उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, कि हे प्रभु, ज़्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देगा? उसने उनसे कहा; उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुज़्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और सारे यहूदिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों 1:4-8)।

लूका लिखता है कि एक अन्य अवसर पर यीशु ने उन्हें बताया था कि ''तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो'' (लूका 24:48, 49)।

शिक्षक इस बात की वकालत करते हैं कि ''बार-बार दोहराना सिखाने का सबसे अच्छा ढंग है।'' यह भी कहा जा सकता है कि ''किसी मामले में तथ्यों का निर्धारण करना यथार्थता का नियम है।'' राज्य के आने के सज़्बन्ध में जिन तथ्यों को हमने देखा है उन्हें ध्यान से देखें: (1) यीशु की सेवकाई के प्रारज़्भिक भाग में राज्य ''निकट'' था। (2) राज्य उन में से कुछ

लोगों के जीवनकाल में ही आ जाना था जिन्होंने बाद में यीशु को अपनी सेवकाई में सुनना था। (3) राज्य सामर्थ सहित आना था। (4) सामर्थ का आना प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के आने के साथ होना था। (5) यीशु ने अपने प्रेरितों से बात करते हुए, जो शायद अन्तिम बात थी, उन्हें बताया कि थोड़े ही दिनों में उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया जाएगा। (6) प्रेरितों को यरूशलेम में पवित्र आत्मा की या सामर्थ के आने के लिए प्रतीक्षा करनी थी। इन सभी तथ्यों में यीशु अपने चेलों से यह कह रहा था कि जब राज्य आएगा, तो उन्हें पता चल जाएगा, ज़्योंकि इसका आना इन सभी स्पष्ट चिह्नों के साथ होना था।

यह कुछ उस उज़र जैसा है जो हम किसी व्यज़्ति के इस प्रश्न के उज़र में दें कि ''मुझे कैसे पता चलेगा कि समय का अन्त हो रहा है ?'' हम कहेंगे कि नया नियम कहता है कि अन्त यीशु के दोबारा आने पर होगा। इसमें यह भी कहा गया है कि मसीही युग के अन्त में यीशु के प्रकट होने के समय धधकते हुए बादलों (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9; प्रकाशितवाज़्य 1:7), स्वर्ग की सेना के साथ (मज़ी 25:31), और उसके आने पर हर आंख द्वारा उसे देखने से होगा (प्रकाशितवाज़्य 1:7)। फिर तो यह सुनिश्चित करने के लिए, आपको पता होगा कि वह कब आएगा। आप को यह ज़रूरत नहीं होगी कि कोई आपको बताए कि समय के अन्त के समय में ज़्या होने वाला है! इसी प्रकार, यीशु ने अपने चेलों को बताया कि राज्य अर्थात कलीसिया शीघ्र ही आ जाएगा और सामर्थ के साथ पवित्र आत्मा के आने पर स्थापित होगा। जब यह आ गया, तो वे आसानी से इसे पहचान सकते थे और अच्छी तरह इसके बारे में जानते होंगे।

सारांश

यीशु की ये भविष्यवाणियां कब पूरी हुईं ? राज्य कब आया ?

ज़्या ये सभी भविष्यवाणियां मसीह के मुर्दों में से जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन पूरी नहीं हो पाई थीं ? पिन्तेकुस्त का दिन आने पर तो पवित्र आत्मा प्रेरितों पर बहाया गया था (प्रेरितों 2:1-4)। पवित्र आत्मा के इस बहाए जाने से प्रेरितों को पूरे रोमी साम्राज्य में जी उठे मसीह की गवाही देने के लिए स्वर्ग से सामर्थ मिली थी। जब पतरस ने लोगों की भीड़ को अपने मुज़्य सज़्बोधन में पवित्र आत्मा के उतरने को योएल नबी की भविष्यवाणी का पूरा होना कहा (योएल 2:28-32; प्रेरितों 2:16), जो ''अन्त के दिनों'' के आरज़्भ के साथ पवित्र आत्मा के बहाए जाने के समान था। पतरस ने यह भी प्रचार किया कि उस समय मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर, प्रभु और मसीह बनकर, मुर्दों में से जी उठकर, महिमा पाकर राज कर रहा था। उसने कहा, ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो'' (प्रेरितों 2:33)। पतरस के संदेश के जवाब में, विश्वास करके, मन फिराने, और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के द्वारा तीन हज़ार लोगों ने प्रभु की आज्ञा मानी और कलीसिया में मिलाए गए (प्रेरितों 2:41)। पवित्र आत्मा का आना प्रभु के स्वर्ग में लौट जाने के केवल

दस दिन बाद हुआ था (प्रेरितों 1:3; 2:1) और इस कारण यह प्रभु के स्वर्गारोहण के कुछ दिन बाद ही प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने की उसकी प्रतिज्ञा से मेल खाता था (प्रेरितों 1:5)। इसके अलावा पवित्र आत्मा का आना यूहन्ना और यीशु द्वारा कालक्रमानुसार राज्य के निकट अर्थात शीघ्र आने की घोषणा से मेल खाता है (मत्ती 3:1; 4:17)।

मसीह के पुनरुत्थान के बाद का यह पिन्तेकुस्त, बिना किसी संदेह के राज्य के आने के समय के रूप में खड़ा होता है। मानवीय इतिहास में यह वह मिलन स्थल है जहां पर प्रभु ने अपनी कलीसिया स्थापित की थी। बेशक ''कलीसिया'' और ''राज्य'' मसीह के वर्तमान राज्य के अलग-अलग दृष्टिकोणों को दिखाता है, परन्तु यह परमेश्वर और मसीह के उसी मूल सिद्धांत की बात है जिसके अनुसार कलीसिया ही प्रभु का अविनाशी राज्य है।

मसीही युग में रहना कितने सौभाग्य की बात है! यह युग ''राज्य आए'' का युग अर्थात ऐसा युग नहीं है, जिसमें नबी और पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई के समय रहने वाले लोग राज्य के किसी दिन प्रकट होने की आशा कर रहे थे बल्कि यह तो ''राज्य आ चुका'' का युग है। राज्य आ चुका है और हम इसके लोगों के रूप में, सब प्रकार की स्वर्गीय आशिषों में भागीदार होकर जो मसीह की मृत्यु और उस राज्य की स्थापना से मिलती हैं, इसके नागरिकों के रूप में रह सकते हैं।

हम सब इस बात से सहमत होंगे कि इन्सान की सबसे बड़ी त्रासदी अवसर का लाभ न उठाना है। यह बहुत बड़ी गलती है ज़्योंकि इससे इस बात का पता चलता है कि जो आसानी से हो सकता था वह केवल इसलिए नहीं हुआ ज़्योंकि उसकी अवहेलना कर दी। निश्चय ही इस युग अर्थात परमेश्वर के राज्य के युग में रहने वाले किसी व्यज़्ति के लिए, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के प्रति लापरवाह होना और इसके नागरिक के रूप में रहने को नज़रअन्दाज करने से बड़ा छल और ज़्या हो सकता है।

दक्षिणी अफ्रीका में लड़कों की एक टोली छोटे-छोटे, गोल, काले रंग के पत्थरों से खेल रही थी। जांच करने पर किसी ने पाया कि वे पत्थर बिना तराशे हुए हीरे थे। उस पर विचार करें! वे हीरों को पत्थर समझकर अर्थात भविष्य के साथ बच्चों वाला खेल खेल रहे थे।

निकट जाकर देखें, तो हमें इस तस्वीर में अपना आप दिखाई दे सकता है। हम हर प्रकार के काम काज में घिरे फंसे हुए हैं जिसमें पत्थरों के साथ खेलने वाले उन छोटे बच्चों की तरह हमारी व्यस्तता और हमारे दायित्व भी शामिल हैं। लगता है कि हम अपने अन्दर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के अवसर से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं, जो कि मसीह के बलिदान के द्वारा स्वर्ग की ओर से भेजा हुआ परमेश्वर का बहुमूल्य हीरा है। परमेश्वर का हीरा हमारे हाथ में है, लेकिन हम पत्थरों से खेलने की तरह उसके साथ भी ऐसे लापरवाही से व्यवहार करते हैं।

आप ज़्या कर रहे हैं ? ज़्या आप जीवन को पत्थरों के खेल से संतुष्ट करना चाहते हैं या परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करके आगे बढ़कर परमेश्वर के बहुमूल्य हीरे को ले लेते ?

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. कलीसिया के बारे में यीशु ने किस तरह की भविष्यवाणियां कीं ?
2. ज़्या यीशु हमारा नबी है ? अपने उज़र को स्पष्ट करने के लिए प्रमाण दें।
3. ''निकट है'' वाज़्यांश के अर्थों पर चर्चा करें।
4. मरकुस 9:1 का सज़्बन्ध राज्य के आने के समय के साथ कैसे है ?
5. मरकुस 9:1 में राज्य के आने के सज़्बन्ध में ज़्या संकेत है ?
6. किन आयतों से पता चलता है कि राज्य का आना आत्मा के आने से चलना था ?
7. ज़्या आप कहेंगे कि ''सामर्थ के साथ आना'' और ''आत्मा के साथ आना'' का एक ही अर्थ है ?
8. यथार्थता का नियम ज़्या है ?
9. विचार करें कि प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन यीशु की भविष्यवाणियां कैसे पूरी हुई थीं।
10. ज़्या ''कलीसिया'' और ''राज्य'' दोनों शज़्द एक ही अस्तित्व के बारे में बताते हैं ? अपना उज़र विस्तार से बताएं।
11. ज़्या ''राज्य आए'' अर्थात राज्य के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए या राज्य के फैलाव की ?
12. आज राज्य में कैसे प्रवेश किया जा सकता है ?